पिता अब्राहम

पाठ एक

अब्राहम का जीवन: संरचना एवं विषय-वस्तु

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतर्राष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यत: उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तुएं

I. प्रस्तावना 4

II. साहित्यिक रूपरेखा 5

A. उत्पत्ति 5

B. अब्राहम 6

1. बुनियादी इकाईयाँ 6

2. क्रम-व्यवस्था 8

III. प्रमुख विषय 10

A. महत्वपूर्ण हवाला 10

1. परिचय 11

2. भाग एक 11

3. भाग दो 12

B. प्रकट होना 13

1. ईश्वरीय अनुग्रह 13

2. अब्राहम की वफादारी 14

3. अब्राहम के लिए आशीषें 15

4. अब्राहम के माध्यम से आशीषें 17

IV. निष्कर्ष 18

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

पिता अब्राहम

पाठ एक

अब्राहम का जीवन: संरचना एवं विषय-वस्तु

प्रस्तावना

हम सब जानते हैं कि पृथ्वी के देशों के बीच कई सारी भिन्नताएं पाई जाती हैं। उन सभी का अपना भुगोल, कई भिन्न जातीय समूह और अपने अलग रीति-रिवाज़ होते हैं। लेकिन कम से कम एक बात है जो ज्यादातर देशों के बीच समान है: हमारे देश की शुरूआत कैसे हुई इस बारे में हम सभी के पास कहानियाँ हैं। इसलिए हम में से कई लोग उन लोगों के बलिदानों एवं उपलब्धियों के बारे में सुनना पसंद करते जिन्होंने हमारे देशों की नींव रखी। हम उनकी वीरताओं की बढ़ाई में गीतों को गाते हैं।

शुरूआत की इन कहानियों को हम लोग इतना ज्यादा क्यों पसंद करते एवं दूसरों को बताते हैं? क्यों यह बात लगभग हर एक मानवीय संस्कृति में इतनी महत्वपूर्ण है?

हाँ, इसके लिए कम से कम दो कारण हैं। एक ओर तो, भूतकाल की यादों को आगे जारी रखने के लिए हम अपने देशों की उत्पत्तियों के बारे में बात करते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे अपनी जड़ों को याद रखे, वे कहा से आये हैं। लेकिन दूसरी ओर, हम उन आदर्शों को भी याद रखना चाहते हैं जिन्होंने भूतकाल में हमारे देशों का मार्गदर्शन किया ताकि भविष्य के लिए हमें दिशा-निर्देश मिल सके।

हाँ, पुराने नियम में भी परमेश्वर के लोगों के लिए कुछ-कुछ इसी तरह से सच था। प्राचीन इस्राएली लोग अपने शुरूआत के बारे में कहानियों को पसंद करते थे और उन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी इन्हीं दो कारणों के लिए आगे सौंपते रहते थे। बहुत समय पहले की घटनाओं को याद करने के लिए वे अपने पुर्वजों के दिनों के बारे में बताते थे ताकि भूतकाल की महान उपलब्धियों को भूला न जाये। परन्तु स्वयं को उस दिशा का स्मरण कराने के लिए जिसमें उन्हें भविष्य में जाना चाहिए वे इन कहानियों को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे भी बढ़ाते थे।

हमारी श्रृंखला का यह पहला पाठ है जिसका शीर्षक, *पिता अब्राहम* है। इस श्रृंखला में हम उन कहानियों की खोज करेंगे जिन्हें प्राचीन इस्राएली लोग अपने महान पिता, अब्राहम के बारे में बताते थे। और हम देखेंगे कि मूसा ने इन कहानियों को उत्पत्ति की पुस्तक में लिखा ताकि उसके दिनों के इस्राएली लोग बीते कल को याद करें, और इस तरह वे उस भविष्य को भी और स्पष्टता से समझें जिसे परमेश्वर ने उनके लिए सम्भाल कर रखा था।

इस श्रृंखला के तीन पाठों में यह पहला है, और हमने इसका शीर्षक रखा है, "अब्राहम का जीवन: संरचना और विषय-वस्तु।" इस पाठ में, उत्पत्ति के उन अध्यायों की संरचना और विषय-वस्तु पर ध्यान केंद्रित करते हुए हम अब्राहम के जीवन का अपना अवलोकन शुरू करेंगे, जो उनके बारे में बताते हैं। अब्राहम के जीवन की अपनी कहानी का गठन मूसा ने किस प्रकार किया? इन अध्यायों के मुख्य बिन्दु क्या थे?

अब्राहम के जीवन की संरचना एवं विषय-वस्तु की खोज हम दो भागों में करेंगे: पहला, इस विषय-वस्तु की साहित्यिक रूपरेखा की ओर हम गौर करेंगे। और दूसरा, हम इन अध्यायों के प्रमुख विषयों की खोज करेंगे। आइये पहले अब्राहम के जीवन की साहित्यिक रूपरेखा पर गौर करें।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

साहित्यिक रूपरेखा

जब कभी भी हम पवित्र शास्त्र के इन भागों पर आते हैं जैसे अब्राहम का जीवन जिनमें मुख्य रूप से घटनाएं या कहानियां हैं, हमें याद रखना चाहिए कि बाइबल के लेखकों ने जो बहुत पहले घटित हुआ था उसके बारे में सिर्फ सच्चाई से बहुत ज्यादा बात बताने का काम किया है। क्योंकि परमेश्वर का प्रवक्ता होने के लिए पवित्र आत्मा ने उन्हें प्रेरित किया था, तो जो इतिहास उन्होंने लिखा वह पूरी रीति से सत्य था। परन्तु जिन लोगों के लिए उन्होंने लिखा उनकी जरूरतों को संबोधित करने हेतु पवित्र आत्मा ने उन्हें प्रेरित किया, इसलिए अपने पाठकों को ध्यान में रखते हुए बाइबल के लेखकों ने इतिहास के बारे में लिखा। उन्होंने अपनी कहानियों की रूपरेखा जानबूझकर इस तरह बनाई ताकि ये कहानियाँ उन लोगों के जीवनों के लिए प्रासंगिक बनेंगी जो उन्हें प्राप्त करेंगे।

उत्पत्ति की पुस्तक में, जब हम अब्राहम के जीवन के लेख की ओर बढ़ते हैं, तो आश्वस्त हो सकते हैं कि ये कहानियाँ उन घटनाओं का गलत बयान नहीं करती जो वास्तव में अब्राहम के जीवन में घटित हुई थीं। परन्तु इस बात को समझने के लिए कि मूसा के वास्तविक पाठकों के जीवनों में ये कहानियाँ कैसे लागू होती थीं, हमें इस बात की भी जानकारी रखनी है कि उत्पत्ति की पुस्तक अब्राहम के जीवन को किस तरह से दिखाती है।

अब्राहम के जीवन की साहित्यिक रूपरेखा की खोज हम दो चरणों में करेंगे। सबसे पहले, हम उत्पत्ति की पुस्तक का अवलोकन एक पूर्ण इकाई के रूप में प्रस्तुत करेंगे, और देखेंगे कि अब्राहम की कहानी उत्पत्ति की पुस्तक की बड़ी तस्वीर में कैसे फिट बैठती है। और दूसरा, हम उन कहानियों की संरचना पर गौर करेंगे जो अब्राहम के जीवन पर ध्यान केंद्रित करती हैं। आइये उत्पत्ति की संपूर्ण पुस्तक के अवलोकन के साथ शुरू करें।

उत्पत्ति की पुस्तक

सदियों के दौरान, विभिन्न टीकाकारों ने उत्पत्ति की पुस्तक की व्यापक संरचना को अलग-अलग तरीकों से समझा है। उत्पत्ति की पुस्तक को दस भागों में विभाजित करना एक दृष्टिकोण रहा है जिसमें उत्पत्ति की संपूर्ण पुस्तक में फैले तथाकथित "***वंशावली***" यानी इब्रानी भाषा में "***टोलेदोत***" अनुच्छेदों का बार-बार दोहराया जाना है, और हमें स्वीकार करना चाहिए कि इस बड़े पैमाने वाले दृष्टिकोण में कुछ महत्व है। लेकिन हमने दूसरी श्रृंखलाओं में सुझाव दिया है कि उत्पत्ति की पुस्तक को तीन बड़े भागों में देखना कुछ ज्यादा मददगार रहेगा: उत्पत्ति 1:1-11:9 में अति-प्राचीन इतिहास; 11:10-37:1 में प्रारंभिक कुल-पिताओं का इतिहास; और 37:2-50:26 में बाद के कुल-पिताओं का इतिहास।

उत्पत्ति 1:1-11:9 का अति-प्राचीन इतिहास संसार की उत्पत्तियों के बारे में परमेश्वर के प्रकाशित सत्य को बताता है। यह सृष्टि की रचना, सृष्टि के भ्रष्ट होने, और विश्वव्यापी जल-प्रलय के माध्यम से सृष्टि को पुनः आकार दिए जाने के बारे में बताता है। और यह उस तरीके से साहित्यिक इकाई के गठन को दिखाता है जो पूर्वी अति-प्राचीन इतिहासों के कई प्राचीन लेखों के प्रारूप के समान है।

37:2-50:26 में, बाद के कुल-पिताओं का इतिहास यूसुफ की कहानी को बताता है। यूसुफ और उसके भाइयों के बीच झगड़े से यह कहानी को आरंभ करता है, और फिर मिस्र में सत्ता तक यूसुफ की उन्नति की ओर बढ़ता है और अंत में यूसुफ का उसके भाइयों के साथ फिर से मेल-मिलाप हो जाने को बताता है। कई टीकाकारों ने इस बड़े, एकीकृत कहानी को यूसुफ के बारे में एक उपन्यास जैसा कहा है।

पहले और अंतिम भागों के बीच में उत्पत्ति 11:10-37:1 है। इन अध्यायों में शुरूआती कुल-पिताओं का इतिहास शामिल है, यानी इस्राएल देश के पहले पिताओं के बारे में कहानियों का संग्रह। इस श्रृंखला में, हम उत्पत्ति के बीच वाले खंड के एक भाग के साथ रुचि रखते हैं।

सामान्य शब्दों में, प्राचीन कुल-पिताओं का इतिहास दो भागों में विभाजित होता है: 11:10-25:18 में अब्राहम का जीवन और 25:19-37:1 में याकूब का जीवन। पहली नज़र में ये दोहरा विभाजन अजीब लग सकता है क्योंकि पवित्र शास्त्र में अकसर हमने तीन प्राचीन कुल-पिताओं का उल्लेख सुना है: अब्राहम, इसहाक और याकूब। इसलिए, हमने ठीक ही उम्मीद की होगी कि इन अध्यायों की साहित्यिक संरचना भी तीन भागों में होगी, जो कि पहले हमें अब्राहम के बारे में बताता, फिर इसहाक के बारे में और फिर याकूब के बारे में। लेकिन वास्तव में, प्राचीन कुल-पिताओं के इतिहास में कोई भी हिस्सा इसहाक को एक प्रमुख व्यक्ति मानकर उसके लिए समर्पित नहीं है। इसके बजाय वह सिर्फ एक अंतरिम व्यक्ति के रूप में कार्य करता है। उसके जीवन को पहले अब्राहम के जीवन के एक हिस्से के रूप में बताया गया है और फिर याकूब के जीवन के हिस्से के रूप में। परिणामस्वरूप, वास्तव में प्राचीन कुल-पिताओं का इतिहास केवल दो प्रमुख भागों में विभाजित होता है: अब्राहम का जीवन और फिर याकूब का जीवन। इस श्रृंखला में हमारा अध्ययन कुल-पिता काल के पहले भाग पर है, जो कि पिता अब्राहम पर मूसा का लेख है। तो आइये अब्राहम के जीवन की संरचना पर करीब से गौर करें जैसा कि इसे उत्पत्ति 11:10-25:18 में प्रस्तुत किया गया है।

अब्राहम

अब चूंकि हम देख चुके हैं कि उत्पत्ति के व्यापक संरचना के भीतर अब्राहम का जीवन कहां फिट बैठता है, हमें अपने अगले अध्ययन की ओर जाना चाहिए: उत्पत्ति 11:10-25:18 में अब्राहम के जीवन की संरचना पर। अब्राहम के जीवन की संरचना की खोज करने के लिए, हम इन अध्यायों पर दो स्तरों पर गौर करेंगे: एक ओर, हम अब्राहम के जीवन की बुनियादी इकाइयों या घटनाओं की सिर्फ पहचान करेंगे, और दूसरी ओर, हम पता लगायेंगे कि उत्पत्ति की पुस्तक में हमारे पास अब्राहम के व्यक्तित्व में ये विभिन्न घटनाएं किस तरह से व्यवस्थित किए गए हैं। आइये पहले बुनियादी इकाइयों या घटनाओं की पहचान करते हैं।

बुनियादी इकाइयाँ

मूसा ने सत्रह बुनियादी इकाइयों या घटनाओं में अब्राहम के जीवन के बारे में लिखा है:

1. पहले, अब्राहम की अनुगृहित वंशावली (11:10-26 में), अब्राहम के परिवार की विरासत को बयान करने वाली वंशावली।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

2. इस अनुच्छेद के बाद अब्राहम के असफल पिता की घटना है (11:27-32 में), एक दूसरी वंशावली जो कि अपने पिता तेरह के साथ अब्राहम की यात्राओं का वर्णन करती है।
3. अब्राहम का कनान देश को प्रवास (12:1-9 में), अब्राहम की प्रथम बुलाहट और प्रतिज्ञा किए हुए देश की यात्रा का वर्णन।
4. मिस्र देश में अब्राहम का छुटकारा (12:10-20 में), ऐसा समय जब अब्राहम मिस्र में डेरा डाले हुए था और परमेश्वर उसे छुटकारा देता है।
5. लूत के साथ अब्राहम का टकराव (13:1-18 में), अब्राहम के दासों और लूत के दासों के बीच झगड़े की कहानी।
6. अब्राहम लूत को छुड़ाता है (14:1-24 में), वह समय जब अब्राहम लूत को उन राजाओं से छुड़ाने के लिए लड़ाई को जाता है जिन्होंने उसे बंदी बना लिया था।
7. अब्राहम के लिए वाचा की प्रतिज्ञाएं (15:1-21 में), वाचा के द्वारा परमेश्वर द्वारा अब्राहम को आश्वस्त किए जाने वाली घटना कि उसके कई सन्तान होगी और एक स्थाई देश होगा।
8. हाजिरा के साथ अब्राहम की असफलता (16:1-16 में), वह समय जब सारा की दासी, हाजिरा के साथ अब्राहम का एक बच्चा, इश्माएल पैदा होता है।
9. अब्राहम के लिए वाचा की शर्तें (17:1-27 में), परमेश्वर की वाचा वाली घटना जो अब्राहम को परमेश्वर की आज्ञा के प्रति वफादार होने की आवश्यकता को याद दिलाती है।
10. सदोम और अमोरा (18:1-19:38 में), सदोम और अमोरा के विनाश और उस विनाश से लूत को बचाये जाने की कहानी।
11. अबीमेलेक के लिए अब्राहम की प्रार्थना (20:1-18 में), ऐसा समय जब अब्राहम पलिश्ती अबीमेलेक के लिए प्रार्थना करता है।
12. अब्राहम के पुत्र इसहाक और इश्माएल (21:1-21 में), इसहाक के जन्म और अब्राहम के परिवार से इश्माएल के निकाले जाने वाली घटना।
13. अबीमेलेक के साथ अब्राहम की संधि (21:22-34 में), वह समय जब भूमि और पानी के अधिकारों पर अब्राहम अबीमेलेक के साथ संधि-समझौता करता है।
14. अब्राहम की परीक्षा (22:1-24 में), एक बहुत ही परिचित घटना जिसमें परमेश्वर अब्राहम से उसके बेटे इसहाक को बलिदान करने के लिए कहता है।
15. कब्रगाह वाली अब्राहम की संपत्ति (23:1-20 में), सारा की मृत्यु और कब्रगाह वाले स्थान की खरीद।
16. अब्राहम के बेटे इसहाक के लिए पत्नी (24:1-67 में), वह समय जब रिबका इसहाक की पत्नी बनती है।
17. और अंततः, अब्राहम की मृत्यु और वारिस (25:1-18 में), अब्राहम के गुजरने की समापन वाली घटना और उसके वंश का अभिलेख।

जैसा कि हम देख सकते है, अब्राहम के जीवन की कहानी जैसे-जैसे उसके जीवन में घटती हैं, वे घटनाओं के बुनियादी क्रम का पालन करती हैं। कहानियों की शुरूआत अपेक्षाकृत उसके युवा समय और अपने पिता के अधिकार के तहत रहने के साथ आरंभ होती हैं, और अब्राहम के बुढ़े होने और मरने के

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

साथ समाप्त होती हैं। कई अवसरों पर, अब्राहम के जीवन की विभिन्न घटनाओं के बीच संदर्भ और अंतर्निहित संबंध है। लेकिन पुराने नियम के अन्य भागों के साथ तुलना करने पर, अब्राहम के जीवन की कहानी सत्रह अपेक्षाकृत स्वतंत्र घटनाओं की एक श्रृंखला से बनी है। इनमें से प्रत्येक घटना की रूपरेखा को मूसा के वास्तविक इस्राएली श्रोताओं को अब्राहम के जीवन की घटनाओं की रिपोर्ट बताने और विशिष्ट सबक सिखाने के लिए बनाई गई थी। जैसे-जैसे मिस्र से प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर मूसा उन लोगों की अगवाई करता है, तो जब वे अपने जीवनों को जी रहे थे तो इनमें से प्रत्येक घटनाएं उनके लिए बहुत कुछ सीखने की पेशकश करती है, ठीक वैसे ही जैसे हम लोगों लिए इनमें बहुत कुछ सीखने के लिए है जब आज हम अपने जीवनों को जी रहे हैं।

अब्राहम के जीवन की बुनियादी घटनाओं को पेश करने के बाद, अब हम यह जाँच करने की स्थिति में है कि ये इकाइयाँ आपस में किस तरह संबंधित हैं। अब्राहम की कहानी एकीकृत कैसे है? कौन सा तर्क उन्हें व्यवस्थित करता है? सीधे शब्दों में, अब्राहम के जीवन की घटनाओं को विशिष्ट विषयों के चारों ओर संग्रह कीजिए, और ये संग्रह पाँच संतुलित चरणों को बनाते हैं।

क्रम-व्यवस्था

पहला, जैसे कि हम कुल-पिता के जीवन की शुरूआत में अपेक्षा कर सकते हैं, अब्राहम की पृष्ठभूमि और परमेश्वर के साथ उसके शुरुआती अनुभवों के साथ मूसा का लेख आरंभ होता है। इस भाग में शामिल है: अब्राहम का अनुगृहित वंश, उसके असफल पिता, और कनान देश को उसका प्रवास। ये अध्याय विवरण देते हैं कि अपने परिवार की पृष्ठभूमि और प्रतिज्ञा किए हुए देश तक अपने शुरुआती प्रवास पर ध्यान-केंद्रित करने के द्वारा किस प्रकार अब्राहम परमेश्वर के साथ अपने विशेष संबंध की शुरूआत करता है।

अब्राहम के जीवन की घटनाओं का दूसरा संग्रह 12:10 से लेकर 14:24 तक दूसरे लोगों के साथ अब्राहम के शुरुआती संपर्कों पर ध्यान-केंद्रित करता है। इसमें शामिल है मिस्र से उसका छुटकारा, लूत के साथ संघर्ष, और उसके द्वारा लूत का बचाव। ये तीन घटनाएं एक साथ इसलिए हैं क्योंकि ये मुख्यतः से लोगों के कई समूहों के प्रतिनिधियों के साथ अब्राहम के मुठभेड़ों और संबंधों पर ध्यान-केंद्रित करते हैं। इन अध्यायों में कुल-पिता का संबंध मुख्यतः मिस्र के फिरौन, अपने भतीजे लूत, आक्रमण करते राजाओं, सदोम के राजा और सलेम के राजा मलिकिसिदक के साथ है।

अब्राहम के जीवन का तीसरा और मध्य भाग 15:1-17:27 परमेश्वर के साथ अब्राहम के वाचा वाले संबंध पर ध्यान-केंद्रित करता है। कुल-पिता के जीवन के इस भाग में तीन घटनाएं शामिल हैं: अब्राहम के लिए वाचा की प्रतिज्ञाएं, हाजिरा के साथ अब्राहम की असफलता, और अब्राहम वाली वाचा की शर्तें।

चौथा भाग, जो कि 18:1-21:34 में प्रकट होता है, दूसरे लोगों के साथ अब्राहम के बाद वाले संपर्कों को बताता है। ये अध्याय मुख्यतः इसलिए एक साथ हैं क्योंकि ये लोगों के अन्य समूहों के साथ अब्राहम के संबंधों पर ध्यान-केंद्रित करते हैं। ये अध्याय सदोम और अमोरा के साथ अब्राहम के संबंध का वर्णन करते हैं। यहाँ पर हम अबीमेलेक के लिए अब्राहम की प्रार्थना, इसहाक और इश्माएल के साथ अब्राहम के संबंध और अबीमेलेक के साथ अब्राहम की संधि को पाते हैं। ये चारों घटनाएं आगे दिखाती हैं कि कुल-पिता में लूत और उसके परिवार के साथ कैसा व्यवहार किया, और साथ में यह कि सदोम और अमोरा के लोगों और पलिश्ती अबीमेलेक के लिए उसने किस तरह से कार्य किया।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

जैसा कि हम अपेक्षा कर सकते हैं, 22:1-25:18 में, कुल-पिता का पाँचवां एवं अंतिम भाग अब्राहम के जीवन के अंत की बातों के साथ संबंध रखता है, विशेषकर उसके वंश और मृत्यु के साथ। यह लिखता है कि कैसे परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा ली। अब्राहम द्वारा दफनाने वाली भूमि के बारे में यह लिखता है। यह लिखता है कि अब्राहम ने कैसे अपने बेटे इसहाक के लिए पत्नी को खोजा। और साथ में यह अब्राहम की मृत्यु का भी उल्लेख करता है। ये अध्याय अब्राहम की पत्नी सारा और उसके बेटे इसहाक (अब्राहम के सच्चे वारिस) पर ध्यान-केंद्रित करते हैं, और उन्हें अब्राहम की दूसरी पत्नियों और बेटों से ज्यादा सम्मान देते हैं।

क्योंकि अब्राहम के जीवन की घटनाएं अपेक्षाकृत एक दूसरे से स्वतंत्र हैं, जब लोग अब्राहम के बारे में पहली बार पढ़ते हैं, तो अकसर उन्हें लक्ष्यहीनता के साथ एक घटना से दूसरी घटना में भटकने का बोध होता है। वे अब्राहम की कहानियों को ऐसे पढ़ते हैं जैसे कि मूसा ने कम सोच-विचार या योजना के साथ एक के बाद दूसरी घटना को लिखा। परन्तु इस शुरुआती आभास के बावजूद, अब्राहम के जीवन की कहानियाँ वास्तव में घटनाओं के वर्गों या समूहों में व्यवस्थित है जो आपस में प्रमुख विषयों को साझा करती हैं। पाँच चरणों की हमारी साधारण रूपरेखा बताती है कि जो कुछ मूसा अब्राहम के बारे में कहने जा रहा था उसने वास्तव में उसकी योजना बनाई थी। एक बड़े पैमाने पर अब्राहम के जीवन का लेख एक संतुलित नाटक का आकार लेता है। नाटक में प्रत्येक भाग अनुरूप भाग के साथ संतुलन बनाता है।

11:10-12:9 में, हम देखते हैं कि इसमें अब्राहम के पारिवारिक पृष्ठभूमि और परमेश्वर के साथ उसके शुरुआती अनुभवों पर ध्यान आकर्षित किया गया है। इन शुरुआती मामलों के साथ विषम संतुलन में, 22:1-25:18 में, समापन विषय-वस्तु अब्राहम के अंतिम वर्षों एवं उसके संतानों पर ध्यान आकर्षित करता है।

इसके अलावा, अब्राहम के जीवन का दूसरा भाग मुख्यतः ऐसी घटनाओं से बना है जो अन्य जनजातियों और देशों के लोगों के साथ अब्राहम के व्यवहार को चित्रित करता है। और परिपत्र समरूपता से, इसी तरह के विषयों पर लौटते हुए जिन्हें दूसरे भाग में दिखाया गया है, अब्राहम के जीवन का चौथा भाग अन्य लोगों के साथ अब्राहम के व्यवहारों के और ज्यादा उदाहरणों पर ध्यान आकर्षित करते हुए लौटता है।

अंततः, अब्राहम के जीवन के मध्य में, तीन निर्णायक अध्याय हैं जो विशेष रूप से परमेश्वर के साथ अब्राहम की वाचा पर ध्यान-केंद्रित करते हैं। ये अध्याय अब्राहम के जीवन में निर्णायक केंद्र-बिन्दु बनाते हैं और वाचा के संबंधों के मूलभूत गतिशीलता को समझाते हैं जो अब्राहम और उसके वंश का परमेश्वर के साथ था।

इन अध्यायों का आकार बताता है कि मूसा ने अपनी कहानी की सावधानीपूर्वक रचना की। अब्राहम के जीवन के प्रमुख पहलुओं पर ध्यान आकर्षित करने के लिए उसने इस्राएल के पहले कुल-पिता के साहित्यिक चित्र को बनाया था: अब्राहम के चुनाव से लेकर आशीष और उसके उचित वारिस तक, अब्राहम के पहले और बाद के व्यवहार, और परमेश्वर के साथ अब्राहम का वाचा वाला संबंध। और जैसा कि हम देखने जा रहे हैं, इस साहित्यिक आकर्षण को इस्राएलियों की जरूरतों को संबोधित करने के लिए बनाया गया था जिनके लिए सबसे पहले मूसा ने इन कहानियों को लिखा। अब्राहम का जीवन इस्राएलियों को यह सिखाता था कि जब मूसा उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर ले जा रहा था तो उन्हें किस तरह से अब्राहम के कदमों का पालन करना है। और जब हम उत्पत्ति के इस भाग पर पहुँचते हैं, तो जानबूझकर बनाई गई इस रूपरेखा के महत्व को हम बार-बार देखेंगे।

अब्राहम के जीवन के व्यापक साहित्यिक रूपरेखा को देख लेने के बाद, हमें अपने पाठ में अब्राहम के जीवन की संरचना और विषय-वस्तु के दूसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए: उत्पत्ति 11: 10-25:18 के प्रमुख विषय। हालांकि इन अध्यायों की विषय-वस्तु का वर्णन करने के कई तरीके हैं, हम देखेंगे कि जिस रूपरेखा का सुझाव हमने दिया है वह मोटे तौर पर इन अध्यायों के प्रमुख विषयों के अनुरूप है।

प्रमुख विषय

कहने की जरूरत नहीं, अब्राहम के जीवन जैसा बड़ा और जटिल पवित्र शास्त्र के किसी भी हिस्से के मुख्य विषयों का वर्णन करना मुश्किल है। इन अध्यायों में प्रकट होने वाले हर एक मकसद या विषय का उल्लेख करना संभव ही नहीं है। लेकिन उन कई मकसदों को अलग करना संभव है जो अन्यों से ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। और जैसा कि हम देखेंगे, इन अध्यायों में ये प्रमुख विषय अब्राहम के जीवन की कहानियों को एकजुट करते हैं, और उन प्रमुख विचारों को समझने में हमारी मदद करते हैं जिन्हें मूसा अपने मूल श्रोताओं इस्राएलियों से चाहता था कि वे अब्राहम के जीवन से सीखें। और इससे भी अधिक, इन प्रमुख विषयों में हम यह भी देख सकते हैं, कि पवित्र शास्त्र के इस हिस्से से परमेश्वर क्या चाहता है कि हम सीखें।

अब्राहम के जीवन के प्रमुख विषयों पर हम दो तरीकों से देखेंगे: पहले, हम मुख्य हवाले को जाँचेंगे जो अब्राहम के जीवन के चार प्रमुख विषयों का परिचय देता है। और दूसरा, हम उन तरीकों का पता लगायेंगे जिनसे ये विषय अब्राहम के जीवन वाले अध्यायों में प्रकट होते हैं। आइये पहले उस महत्वपूर्ण हवाले को देखें जो अब्राहम की कहनी के विषयों का परिचय देता है।

महत्वपूर्ण हवाला

मुझे यकीन है कि अब्राहम के जीवन की कहानी की शुरुआत के नज़दीक आप उसे फिर से याद कर सकेंगे, उत्पत्ति 12:1-3 में हम अब्राहम के लिए परमेश्वर की बुलाहट को पाते हैं। जब अब्राहम मेसोपोटामिया के ऊर देश में ही रहता था, परमेश्वर अब्राहम से प्रतिज्ञा किए हुए देश में जाने के लिए बुलाता है। अब कई वर्षों से, टीकाकारों या विश्लेषकों ने पहचाना है कि ये आयतें अब्राहम के जीवन की बड़ी कहानी में पाये जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण मकसदों का परिचय देते हैं। इन पदों में मूसा ने क्या लिखा उसे सुनिए:

> “1 **यहोवा ने अब्राम से कहा, अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा।** 2 **और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा।** 3 **और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे,**

उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।" (उत्पत्ति 12:1-3)

ये तीन पद महत्व से भरे हुए हैं और कई भिन्न तरीकों से सारांक्षित किए जा सकते हैं। व्याकरण के स्तर पर, वे पद 1 के पहले भाग में एक परिचय के साथ आरंभ होते हैं। फिर वे अब्राहम के लिए परमेश्वर के वचन के साथ जारी रहते हैं, जो कि दो हिस्सों में विभाजित होता है। भाग 1, पद 1 के दूसरे हिस्से से लेकर पद 2 के ज्यादातर हिस्से में एक आज्ञा-सूचक शामिल है जिसके बाद तीन स्वतंत्र मौखिक अभिव्यक्तियाँ हैं। अब्राहम के लिए परमेश्वर के वचन का दूसरा हिस्सा पद 2 के अंतिम भाग में प्रकट होता है और फिर पद 3 में। पहले हिस्से के जैसा ही यह दूसरा हिस्सा भी ठीक उसी व्याकरण के प्रारूप का पालन करता है। एक आज्ञा-सूचक के द्वारा इसकी शुरुआत होती है जिसके बाद तीन स्वतंत्र मौखिक अभिव्यक्तियाँ आती हैं। उत्पत्ति 12:1-3 के इन तीन विभाजनों को देखने के द्वारा हम इस हवाले के महत्व में कुछ महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं।

परिचय

सबसे पहले पद 1 में उस साधारण तरीके को सुनिये जिसमें मूसा अब्राहम के लिए परमेश्वर के वचनों का परिचय देता है:

यहोवा ने अब्राम से कहा था (उत्पत्ति 12:1)

कई आधुनिक अनुवाद ठीक ही टिप्पणी करते हैं कि इस वाक्य में जो क्रिया है उसका अनुवाद "यहोवा ने *कहा था*" होना चाहिए न कि "यहोवा ने कहा।" यह अनुवाद इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रेरितों के काम 7:2-4 में स्तिफनुस के उपदेश के अनुसार, हारान में अपने पिता तेरह के मरने से पहले, अब्राहम ने अपनी बुलाहट को ऊर में प्राप्त की थी। लेकिन उत्पत्ति की साहित्यिक प्रस्तुति में, हम पहले पढ़ते हैं कि तेरह 11:32 में मर गया था और फिर हम उत्पत्ति 12:1 में पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया। इस कारण से, उत्पत्ति 12:1 एक अतीत के दृश्य को चित्रित करता है, समय में एक प्रतिगमन को, और इसका अनुवाद होना चाहिए था "यहोवा ने कहा था।" इससे पहले कि अब्राहम परमेश्वर को प्रतिक्रिया देने के लिए कुछ भी करना आरंभ करता है यह पद एक पहले के पल को याद करता है, प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर उसके जाने की शुरुआत करने से बहुत पहले का समय।

भाग एक

इस परिचय के बाद, हम अब्राहम के लिए परमेश्वर के वचनों के पहले भाग पर आते हैं। यह पहला भाग आज्ञा-सूचक क्रिया के साथ आरंभ होता है जो एक आदेश का संकेत देता है। उत्पत्ति 12:1 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। (उत्पत्ति 12:1)

जैसा कि हम देख सकते हैं, यह अनुभाग आज्ञा-सूचक के साथ शुरु होता है, "छोड़" (या जैसा कि एनआईवी बाइबल इसकी व्याख्या करता है "छोड़ कर...चला जा")। परमेश्वर ने अब्राहम को कुछ करने की आज्ञा दी थी: कनान देश को जाने की। यह पहली और मुख्य आज्ञा है जिसे परमेश्वर कुल-पिता को देता है।

प्रतिज्ञा किए देश को जाने की आज्ञा के बाद, परमेश्वर के वचन का पहला भाग पद 2 के पहले भाग में तीन स्वतंत्र मौखिक अभिव्यक्तियों के द्वारा सूचित किया गया हैं। उत्पत्ति 12:2 को फिर से देखें:

> **मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, (उत्पत्ति 12:2)**

ये वचन आशीषों पर केंद्रित हैं जिन्हें परमेश्वर अब्राहम के आगे प्रस्तुत करता है जब वह उसे बुलाता है। पहला, परमेश्वर कहता है वह अब्राहम को एक बड़ी जाति बनायेगा। दूसरा, वह अब्राहम को समृद्धि के साथ आशीष देने की पेशकश करता है। और तीसरा, वह अब्राहम और उसके वंश को एक महान नाम, प्रतिष्ठा देगा।

भाग दो

अब हम अब्राहम को दिए गए परमेश्वर के वचन के दूसरे हिस्से पर आते हैं। हालांकि ज्यादातर आधुनिक अनुवाद हमें इसको देखने के योग्य नहीं बनाते हैं, अब्राहम को दिए गए परमेश्वर के वचन का दूसरा हिस्सा व्याकरण की संरचना में पहले हिस्से के समानान्तर है। यह आज्ञा-सूचक के साथ आरंभ होता है और फिर उसके बाद तीन स्वतंत्र मौखिक अभिव्यक्तियाँ आती हैं। उत्पत्ति 12:2-3 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> **तू आशीष का मूल होगा। और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे। (उत्पत्ति 12:2-3)।**

जिस इब्रानी क्रिया, का यहाँ पर अनुवाद किया गया है, "तू आशीष का मूल होगा," वह आज्ञा-सूचक रूप में है, और शायद पद 1 में "छोड़" वाली आज्ञा के रूप में समानान्तर बनाने के लिए ऐसी अभिकल्पना की गई होगी। लेकिन यह आज्ञा-सूचक एक आज्ञा के रूप में कार्य नहीं करती है। इसका अनुवाद कई तरीकों से किया जा सकता है जैसे: "और तू एक आशीष होगा," या "और तुम आशीष ठहरो" या यह भी कि, "और तू निश्चित रूप से आशीष ठहरेगा।" इन सभी वाक्यों में, यह आज्ञा-सूचक विचारों में एक महत्वपूर्ण बदलाव दिखाता है। यह अब्राहम द्वारा आशीष को प्राप्त करने से (जैसा कि हमने पद 2 के पहले हिस्से में देखा था) ध्यान को हटाती है और ध्यान को अब्राहम का दूसरों के लिए आशीष का स्रोत बनने के ऊपर लगाती है।

इस दूसरे आज्ञा-सूचक रूप के बाद भी तीन स्वतंत्र मौखिक अभिव्यक्तियाँ आती हैं। ये तीन क्रियाएं उस प्रक्रिया को दिखाती हैं जिसके द्वारा अब्राहम दूसरे लोगों के लिए आशीष बनेगा। सबसे पहले, परमेश्वर ने कहा, "जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा..." इसका अर्थ है, परमेश्वर उन लोगों को भली वस्तुएं देगा जो अब्राहम के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे। जब लोगों ने अब्राहम के साथ अच्छा व्यवहार किया, तो परमेश्वर उनका भला करेगा। दूसरा, परमेश्वर ने वादा किया, "जो तुझे कोसे, उसे मैं श्राप दूंगा..." इसका अर्थ है, परमेश्वर उन लोगों को श्राप देगा जो अब्राहम को तिरस्कार करेंगे। उन लोगों के साथ सख्ती से निपटने के लिए जो स्वयं को अब्राहम का शत्रु बनायेंगे। परमेश्वर ने अब्राहम को नुकसान से बचाने के लिए वादा किया। लेकिन तीसरी बात में, परमेश्वर कहता है, "भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।" पहली नज़र में, ऐसा लग सकता है कि यह तीसरी आशीष अब्राहम के शत्रुओं के लिए श्राप के विषय के विपरीत है, लेकिन परमेश्वर वादा करता है कि अब्राहम के दोस्तों को आशीष और उसके शत्रुओं को श्राप देने की दोहरी प्रक्रिया के द्वारा, परमेश्वर अपनी आशीषों को अंततः भूमण्डल के सारे कुलों के लिए विस्तारित करेगा। अतः हम देखते हैं कि उत्पत्ति के 12वे अध्याय की शुरुआत का व्याकरण तीन प्रमुख भागों में विभाजित होता है: परिचय, उन आशीषों पर ध्यान-आकर्षण जिन्हें परमेश्वर अब्राहम को देगा और उन आशीषों पर ध्यान-आकर्षण जिन्हें परमेश्वर अब्राहम के द्वारा पूरे भूमण्डल के लिए लेकर आयेगा।

उत्पत्ति 12वे अध्याय में इन पदों की संरचना को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि कई मायनों में उत्पत्ति में अब्राहम की कहानियाँ बताती है कि ये प्रतिज्ञाएं जिन्हें परमेश्वर अब्राहम को देता है कैसे उसके जीवन में पूरी हुई। जब मूसा कुल-पिता के बारे में लिख रहा है, वह अपनी कहानियों को इस तरह से आकार देता है जो उन वचनों की ओर ध्यान-आकर्षण करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने अब्राहम से कहा जब वह उसे प्रतिज्ञा किए हुए देश में जाने के लिए बुलाता है।

व्याकरण की इस संरचना को ध्यान में रखते हुए, हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि उत्पत्ति 12:1-3 से आगे अब्राहम के जीवन के प्रमुख विषय किस रीति से प्रकट होते हैं।

प्रकट होना

हम ध्यान देंगे कि यहाँ पर चार प्रमुख विषय हैं जो इन पदों में नज़र आते हैं। अब्राहम के लिए ईश्वरीय अनुग्रह के साथ हम शुरुआत करेंगे। फिर हम परमेश्वर के प्रति अब्राहम की वफादारी की शर्त के साथ आगे बढ़ेंगे, फिर अब्राहम के लिए परमेश्वर की आशीषों की ओर, और अंततः अब्राहम के माध्यम से परमेश्वर की आशीषों को देखेंगे।

ईश्वरीय अनुग्रह

पहला मूल विषय, जो कई बार अब्राहम के जीवन में घटित होता है, वह है कि परमेश्वर का अब्राहम के साथ संबंध उसके अनुग्रह पर आधारित था। उत्पत्ति 12:1 के शुरुआती शब्दों में ईश्वरीय अनुग्रह अप्रत्यक्ष रीति से प्रकट होता है। जैसा कि हमने देखा है, वहाँ हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

यहोवा ने अब्राम से कहा था (उत्पत्ति 12:1)

इन साधारण शब्दों ने मूसा के वास्तविक श्रोताओं को स्मरण दिलाया कि परमेश्वर के साथ अब्राहम का संबंध इसलिए बना क्योंकि इससे बहुत पहले कि अब्राहम परमेश्वर की सेवा के कुछ कार्य करता परमेश्वर अब्राहम के जीवन में प्रवेश करता है।

अब्राहम की बुलाहट उसके वयस्क जीवन में बहुत पहले आ गई थी। वह कनान देश के लिए नहीं चला था; उसने शत्रुओं पर विजय नहीं पाई थी; वाचा के प्रति वफादारी के लिए वह प्रतिबद्ध नहीं हुआ था; उसने सदोम और अमोरा में धर्मी लोगों के लिए प्रार्थना नहीं की थी; वह विश्वास की किसी परीक्षा में सफल नहीं हुआ था। इसके बावजूद, परमेश्वर ने अब्राहम को अपना विशेष दास कहा क्योंकि अब्राहम के प्रति अनुग्रहकारी होना परमेश्वर को अच्छा लगा।

अब बेशक, परमेश्वर का अनुग्रह परमेश्वर के साथ अब्राहम के संबंध के सिर्फ शुरुआती चरण में ही नहीं दिखाया था। परमेश्वर का अनुग्रह वह विषय है जो अब्राहम की कहानियों में निरंतर नज़र आता है क्योंकि कुल-पिता के जीवन के हर एक क्षण में परमेश्वर ने उस पर अपनी करुणा दिखाई। चूंकि अब्राहम एक पापी मनुष्य था, इसलिए उसे हर समय परमेश्वर की करुणा व दया की जरूरत थी। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 15:6 वाले प्रसिद्ध पद में हम सीखते हैं कि यहाँ तक कि अब्राहम के लिए छुटकारे वाली धार्मिकता परमेश्वर की करुणा का एक उपहार था। वहाँ हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> **उसने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना। (उत्पत्ति 15:6)**

जैसा कि प्रेरित पौलुस ने रोमियो 4:3 और गलातियों 3:6 में बताया है कि यह तथ्य कि परमेश्वर ने अब्राहम के लिए धार्मिकता को गिना, दिखाता है कि यह परमेश्वर की करुणा का एक कार्य था, न कि भले कामों के लिए कोई पुरस्कार। और यह ईश्वरीय अनुग्रह और दया के माध्यम से था कि अब्राहम ने इसे एवं कई अन्य आशीषों को परमेश्वर से प्राप्त किया।

एक मसीही होने के नाते हम सब अपने जीवनों में परमेश्वर के अनुग्रह के महत्व को जानते हैं। हम जानते हैं कि परमेश्वर के साथ हमारे संबंध की शुरुआत वही अपने अनुग्रह के द्वारा करता है और हम जानते हैं कि वह हमें अपने साथ संबंध में अपने अनुग्रह के द्वारा ही बना कर रखता है। परमेश्वर की करुणा व दया के बिना हम लोग कहाँ होते? हाँ बिल्कुल यही बात अब्राहम के लिए भी सत्य थी। और इससे भी अधिक, परमेश्वर का अनुग्रह इस्राएलियों के लिए भी जरूरी था जिनके लिए मूसा ने अब्राहम के बारे में लिखा। उन्हें भी अपने दिनों में अपने जीवनों में परमेश्वर की करुणा व दया की जरूरत थी, दिन प्रति दिन। और इसी कारण से, जब मूसा अब्राहम के जीवन की कहानियों को लिख रहा था, वह उनका ध्यान बार-बार परमेश्वर के अनुग्रह की ओर खींचता है।

अब्राहम की वफादारी

परमेश्वर के अनुग्रह के विषय के अलावा, हमें यह भी ध्यान देना चाहिए कि उत्पत्ति 12:1-3 अब्राहम की वफादारी पर जोर डालती है। परमेश्वर ने अब्राहम को सिर्फ अपनी दया दिखाने के लिए नहीं चुना था; उसने कुल-पिता पर दया इसलिए दिखाई ताकि अब्राहम विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता के साथ प्रतिक्रिया दे। जैसा कि हमने देखा, उत्पत्ति 12:1 का पहला आज्ञा-सूचक परमेश्वर के प्रति विशिष्ट रूप में विश्वासयोग्य होने कि लिए अब्राहम की जिम्मेदारी पर जोर डालता है। परमेश्वर उसे वहाँ पर आज्ञा देता है:

अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। (उत्पत्ति 12:1)

इस बात को समझने के लिए ज्यादा सोचना नहीं पड़ेगा कि यह ईश्वरीय बुलाहट अब्राहम से बहुत ज्यादा वफादारी की माँग करती है। उसे अपने देश और अपने पिता की संपत्ति को पीछे छोड़ना था और ऐसे स्थान के लिए जाना था जो उसे अभी तक दिखाया भी नहीं गया था। हाँ, परमेश्वर ने अब्राहम पर अपनी दया दिखाई, लेकिन अब्राहम से भी परमेश्वर के प्रति दिल की गहराई से विश्वासयोग्य सेवा दिखाने की अपेक्षा की गई थी।

दुर्भाग्य से, कई मसीही लोग अब्राहम को परमेश्वर पर विश्वास एवं भरोसा करने का एक उदाहरण मात्र समझते हैं। यह अब्राहम के जीवन में महत्वपूर्ण विषय है और नए नियम के कई अनुच्छेदों में इस पर जोर डाला गया है। लेकिन हमें इस तथ्य को कभी नजरंदाज नहीं करना चाहिए कि परमेश्वर ने अब्राहम को आज्ञाकारी होने के लिए हुक्म दिया था, परमेश्वर के प्रति अपनी विश्वासयोग्य सेवा देने के लिए। कई बार परमेश्वर ने कुल-पिता से विश्वासयोग्यता की माँग की। उसे हर परिस्थिति में परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होना था।

शायद उस समय का सबसे नाटकीय उदाहरण उत्पत्ति 22 में मिलता है जब परमेश्वर के प्रति अब्राहम से अपनी विश्वासयोग्यता दिखाने की माँग की गई थी, उस समय जब परमेश्वर कुल-पिता को उससे उसके बेटे की बलि करने की आज्ञा देता है इस बात को प्रमाणित करने के लिए कि वह अपने बेटे से ज्यादा परमेश्वर से प्यार करता है। परमेश्वर द्वारा इतनी बड़ी शर्त की माँग करना कल्पना करने में कठिन लगती है।

हालांकि अब्राहम को इस कार्य एवं कई अन्य प्रकारों से विश्वासयोग्यता दिखाने की आवश्यकता थी, उत्पत्ति 12:1 अब्राहम को दी गई बहुत ही महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों में से एक स्पष्ट करता है। वहाँ परमेश्वर ने कहा था:

उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। (उत्पत्ति 12:1)

जैसा कि यह अनुच्छेद दिखाता है, अब्राहम को उस देश को जाना अवश्य था जिसे परमेश्वर उसे दिखाएगा। अब्राहम को प्रतिज्ञा किए हुए देश में निवास करना था, और यह विषय कुल-पिता की कहानियों में कई बार प्रकट होता है। परमेश्वर की यह बड़ी योजना अब्राहम और उसके विश्वासयोग्य वंश दोनों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण थी कि कुल-पिता प्रतिज्ञा किए हुए देश को जाए। और जब हम स्मरण करते हैं कि मूसा अब्राहम के बारे में इन कहानियों को इस्राएलियों के लिए लिख रहा है जिन्हें वह स्वयं प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर ले जा रहा है, तो उसके द्वारा इस पर जोर दिए जाने पर बिल्कुल भी आश्चर्य की बात नहीं है।

यीशु मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम जानते हैं कि भले ही उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह का एक मुफ्त उपहार है, परमेश्वर हम से पूरे दिल से उसकी आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा हमारी कृतज्ञता को दिखाने की अपेक्षा करता है। मूसा इस सिद्धांत को अच्छे से समझता था। वह जानता था कि अब्राहम के लिए परमेश्वर के अनुग्रह ने अब्राहम को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बनाया। और इस कारण से, हम देखने जा रहे हैं कि जब हम अब्राहम के जीवन का अध्ययन करते हैं तो विश्वासयोग्यता की शर्त कई बार प्रकट होती है। मूसा अपने वास्तविक इस्राएली श्रोताओं के बारे में कुछ बाते जानता था। वे परमेश्वर के सामने विश्वासयोग्यता का जीवन जीने के महत्व को भूल जाने के आदी थे। चाहे भले

ही परमेश्वर ने उन पर अपनी दया दिखाई हो जब उन्हें मिस्र देश से छुटकारा दिया और जंगल में उन्हें जीवित रखा, परन्तु वे परमेश्वर की आज्ञाओं से फिर गए। और इसी कारण से, अब्राहम की कहानियों के प्रमुख विषयों में से एक विषय, परमेश्वर के प्रति अब्राहम की विश्वासयोग्यता थी। यह विषय बार-बार इसलिए प्रकट होता है क्योंकि मूसा के वास्तविक श्रोताओं, और वर्तमान में हम लोगों को भी विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता में परमेश्वर की सेवा करने के लिए प्रोत्साहित होने की जरूरत है।

अब्राहम के लिए आशीषें

जैसा कि अब तक हमने देखा है, परमेश्वर ने अब्राहम के लिए बहुत ज्यादा अनुग्रह दिखाया, और उस से सच्चे समर्पण की अपेक्षा की। उत्पत्ति 12:1-3 में तीसरा विषय जिस पर हमें ध्यान देना चाहिए वह है अब्राहम को दी जाने वाली आशीषें। आप स्मरण करेंगे कि उत्पत्ति 12:2 में कुल-पिता से परमेश्वर ने यह कहा था:

> **मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा। (उत्पत्ति 12:2)**

परमेश्वर कुल-पिता को तीन आशीषें पेश करता है। पहले स्थान में, परमेश्वर ने कहा था कि अब्राहम एक महान देश बनेगा। उसकी संतान अनगिनत होंगे। और उसके वंशज वास्तव में एक साम्राज्य, एक महान देश बनेंगे। उस समय अब्राहम और जो लोग उसके साथ थे वे अपेक्षाकृत बहुत कम थे। और अब्राहम का कोई अपना बच्चा नहीं था। फिर भी, परमेश्वर वादा करता है कि एक दिन अब्राहम के वंशजों की संख्या आकाश के तारागणों से भी ज्यादा होगी।

दूसरे स्थान पर, परमेश्वर ने अब्राहम से कहा था कि वह उसे आशीष देगा। सभी संभावनाओं में, इस वाक्य का अर्थ है कि अब्राहम और उसके वंशजों को जबरदस्त समृद्धि की आशीष प्राप्त होगी। अब्राहम और उसके वंशज बहुतायत और संपन्नता में जीवन व्यतीत करेंगे। वे पृथ्वी पर भकटने वाले नहीं रहेंगे, न ही वे खाली उपनिवेशी बनेंगे। जब अब्राहम और उसके वंशज विश्वासयोग्य साबित होंगे, वे महान समृद्धि का आनंद उठायेंगे।

तीसरे स्थान पर, परमेश्वर की आशीष की पेशकश में अब्राहम पर महान नाम प्रदान करना शामिल था। दूसरे शब्दों में, यदि अब्राहम प्रतिज्ञा किए हुए देश को जायेगा और वफादारी से परमेश्वर की सेवा करेगा, तो उसके वंशजों की अनगिनत संख्या और समृद्धि उसे और उन्हें दुनिया भर में सम्मानित बनायेगी। कुल-पिता और उसके विश्वासयोग्य वंशजों पर महान महिमा आयेगी।

वास्तव में, अब्राहम की कहानियों के दौरान, मूसा बार-बार बताता है कि इन प्रकारों की आशीषों को अब्राहम के ऊपर उण्डेला गया था। अब्राहम के बेटे हुए; जब वह एक अनुभव से दूसरे पर गया तो उसने संपत्ति को प्राप्त किया; उस क्षेत्र में वह एक जानी-मानी हस्ती बना। इस्राएलियों के लिए जिन्होंने इन कहानियों को सुना, अब्राहम की आशीषें उनके भविष्य की आशीषों के लिए भी बड़ी आशा को लेकर आई। कुल-पिता को दी गई वंशजों, समृद्धि और शोहरत के उपहार इनसे भी बड़ी आशीषों का मात्र एक पूर्वाभास हैं जिन्हें परमेश्वर अब्राहम के वफादार वंशजों को देगा।

मसीहों के रूप में, हम लोगों ने परमेश्वर से कई आशीषों को प्राप्त किया है यहाँ तक कि हम उन सब को याद भी नहीं कर सकते हैं। और हाँ, इस्राएलियों ने भी जो मूसा के पीछे प्रतिज्ञा किए हुए देश

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

को जा रहे थे परमेश्वर से अनगिनत आशीषों को प्राप्त किया था। उन्हें गुलामी से छुड़ाया गया था; वे संख्या में बहुत बड़ गए थे; उनकी पूरी यात्रा के दौरान उन्हें बचाया एवं पाला-पोसा गया था और वे प्रतिज्ञा किए हुए देश के मार्ग पर थे, भविष्य में बहुत आशीषों वाला देश। लेकिन इस्राएली लोग हमारे समान थे, परमेश्वर ने जो कुछ उनके लिए किया था और जो कुछ उनके लिए रखा था उसे भूलने के आदी। इसलिए मूसा ने अपने इस्राएली श्रोताओं को उनके जीवनों में जो आशीषें परमेश्वर ने उन्हें दी थीं उनको याद दिलाने के लिए अब्राहम के लिए परमेश्वर की आशीषों के बारे में लिखा ताकि उनके हृदय कृतज्ञता से भर जाए।

अब्राहम के माध्यम से आशीषें

परमेश्वर की दया, अब्राहम की वफादारी, और अब्राहम के लिए परमेश्वर की आशीषों के अलावा, उत्पत्ति 12:1-3 इस तथ्य की ओर भी ध्यान आकृषित करता है कि दूसरी जातियों के लिए आशीषें अब्राहम के माध्यम से आयेंगी। उत्पत्ति 12:2-3 में परमेश्वर ने क्या कहा था वह शायद आपको स्मरण होगा:

> **और तू आशीष का मूल होगा। 3 और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे। (उत्पत्ति 12:2-3)।**

इन वचनों ने बताया है कि अब्राहम सिर्फ आशीषों को ही नहीं प्राप्त करेगा परन्तु पृथ्वी के सभी लोग उसके द्वारा आशीषित हो जायेंगे। परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा किए हुए देश में सिर्फ अपने जीवन और अपने वंशजों के जीवनों को समृद्ध करने के लिए नहीं बुलाया था। परमेश्वर ने अब्राहम को पृथ्वी की सभी जातियों के लिए ईश्वरीय आशीषों का स्रोत बनने के लिए बुलाया था। अब यह स्मरण करना महत्वपूर्ण है कि यह अनुच्छेद सिखाता है कि अब्राहम के माध्यम से पृथ्वी भर की आशीषें दो तरीकों से आयेंगी। उत्पत्ति 12:3 में परमेश्वर ने कहा:

> **जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा। (उत्पत्ति 12:2-3)।**

इस अनुच्छेद के अनुसार, मानव जाति के बीच अब्राहम एक दो-धारी तलवार के समान कार्य करेगा। क्योंकि अब्राहम परमेश्वर द्वारा अनुगृहित था, जब दूसरे देशों के लोग अब्राहम को आशीष देते थे, अर्थात, जब वे उसका आदर करते थे और इस तरह परमेश्वर का आदर करते थे जिसकी वह सेवा करता था, तो परमेश्वर उन्हें आशीष देगा। लेकिन जब दूसरे देशों के लोग ने अब्राहम को श्राप दिया या उस पर आक्रमण किया और इस तरह अब्राहम के परमेश्वर को तुच्छ जाना, तो परमेश्वर उन्हें सज़ा देगा। अन्य लोगों का भविष्य इस बात पर निर्भर करता था कि उन्होंने अब्राहम के साथ कैसा बर्ताव किया था।

अपने जीवनकाल में, दूसरे देशों का प्रतिनिधित्व कर रहे कई लोगों के साथ अब्राहम संपर्क में आया जैसे कि, पलिश्तियों, कनानियों, मिस्रियों, और उसका भतीजा लूत जो मोआबियों और

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

अम्मोनियों का पिता था। ये आपसी संपर्क महत्वपूर्ण थे क्योंकि वे उन विशिष्ट तरीकों को दिखाते थे जिनमें दूसरे लोगों को आशीष और श्राप देने में परमेश्वर ने अपने वचन को निभाया था। ये इस बात को भी दर्शाते थे कि अपने जीवनकाल में ही अब्राहम संसार के लिए आशीष बनना शुरू हो गया था।

परमेश्वर के लोगों के लिए इस महत्वपूर्ण शिक्षा को अकसर भूल जाना आसान है। मूसा के समय में इस्राएली लोग आज के कई मसीही लोगों के समान थे। हम परमेश्वर से उद्धार की आशीष और परमेश्वर से जीवन का आनंद उठाते हैं, लेकिन हम भूल जाते हैं कि ये आशीषें हम में से प्रत्येक को क्यों दी गई हैं। इस्राएल को मूसा की अगवाई में प्रत्येक एवं हर-एक आशीष जिन्हें परमेश्वर ने दिया और प्रत्येक एवं हर-एक आशीष जिन्हें वह आज अपनी कलीसिया को देता है एक बड़े उद्देश्य के लिए अभिकल्पित की गई हैं। हमें आशीषित किया गया है ताकि हम संसार भर में परमेश्वर की आशीषों को फैला देंगे। परमेश्वर ने अब्राहम को अपने पास बुलाया ताकि अब्राहम परमेश्वर की आशीषों में संसार के देशों की अगवाई करेगा। मूसा के दिनों में परमेश्वर ने इस्राएल को अपने पास बुलाया ताकि वे परमेश्वर की आशीषों में संसार के देशों की अगवाई करेंगे। और आज परमेश्वर ने कलीसिया को अपने पास बुलाया है ताकि हम लोग परमेश्वर की आशीषों में संसार के देशों की अगवाई कर सकें। इस्राएलियों के लिए जिन्होंने अब्राहम की कहानियों को सबसे पहले प्राप्त किया यह विषय बहुत महत्वपूर्ण था। और जब अपने समय में हम मसीह के पीछे चलते हैं तो हमारे लिए भी यह महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

इस पाठ में हमने अब्राहम के जीवन के अवलोकन पर पहली दृष्टि की है। और हम ने अपना ध्यान उत्पत्ति के इस भाग की संरचना, या रूपरेखा पर केंद्रित किया है। और साथ में हमने उन प्रमुख विषयों, या विषय-वस्तु की भी जाँच की है जिन्हें मूसा ने इस साहित्यिक संरचना के संदर्भ में अब्राहम के जीवन में प्रस्तुत किया।

जैसे-जैसे हम इन पाठों में आगे बढ़ते हैं, हम बार-बार इस पाठ के विषयों पर लौटेंगे। हमने देखा कि अब्राहम के जीवन की कहानी में पाँच चरण की समरूपता है। और हमने यह भी देखा कि अब्राहम के जीवन में चार प्रमुख विषय हैं: अब्राहम के ऊपर परमेश्वर की दया, अब्राहम की विश्वासयोग्यता, अब्राहम के लिए परमेश्वर की आशीषें, और अब्राहम के माध्यम से परमेश्वर की आशीषें। ये विषय हमें अब्राहम के जीवन की कहानी में न केवल यह अंतर्दृष्टि देते हैं कि प्राचीन समय में इस्राएलियों के लिए जब यह पहली बार लिखी गई तो क्या मायने रखती थी, परन्तु ये विषय पवित्र शास्त्र के इस भाग को आज हमारे अपने जीवनों में भी लागू करने को हमारे लिए संभव बनाते हैं।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

Dr. Richard L. Pratt, Jr. (Host) is Co-Founder and President of Third Millennium Ministries. He served as Professor of Old Testament at Reformed Theological Seminary for more than 20 years and was chair of the Old Testament department. An ordained minister, Dr. Pratt travels extensively to evangelize and teach. He studied at Westminster Theological Seminary, received his M.Div. from Union Theological Seminary, and earned his Th.D. in Old Testament Studies from Harvard University. Dr. Pratt is the general editor of the NIV Spirit of the Reformation Study Bible and a translator for the New Living Translation. He has also authored numerous articles and books, including *Pray with Your Eyes Open*, *Every Thought Captive*, *Designed for Dignity*, *He Gave Us Stories*, *Commentary on 1 & 2 Chronicles* and *Commentary on 1 & 2 Corinthians*.